हक़ीक़ते दीन

क़िस्त –5

मुफ़क्किरे इस्लाम डॉ0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला

ईसाई पादरियों की दो बड़ी ग़लतियाँ

एक तो ये काम किया कि एक फ़िरक़े को दूसरे से लड़ाया और दूसरा काम यह किया कि पादरियों ने कहा कि बाइबिल पढ़ो मगर साइंस और टेक्नालॉजी ना पढ़ो। क्यों साइंस और टेक्नालोजी न पढ़ो? इसलिए कि साइंस कुछ कहती है, बाइबिल कुछ कहती है। साइंस के पढ़ने पर पाबन्दी लगा दी और साइंसदानों को सख़्त से सख़्त सज़ायें दीं, तो पादरियों ने दो बहुत बड़ी गलतियाँ की। पहली यह कि एक फ़िरक़े को दूसरे फ़िरक़े से लड़ाया और दूसरी ग़लती यह कि साइंस और टेक्नालॉजी के दरवाजों को ईसाइयों के लिए बन्द कर दिया।

नतीजा क्या हुआ? नतीजा यह हुआ कि ईसाइयत ख़त्म हो गयी लेकिन साइंस और टेक्नालॉजी रह गयी। क्यों रह गयी? इसलिए कि ईसाइयत कहती थी कि जो हम कह रहे हैं वो हक़ है। साइंस कहती थी जो हक़ है वो हक़ है यानि Fact is Fact। मैं बहुत अफ़सोस के साथ कह रहा हूँ कि इस मुल्क में नाम निहाद(Socalled) इसलाम के ठेकेदार भी यही दो ग़लतियाँ कर रहे हैं। एक तन्ग नज़री (Narrow Mindness) फिरक़ा परस्ती, तशद्दुद (Violence) और इख़्तेलाफ राय की सज़ा मौत क़रार देना और दूसरे ये कि साइंस और टेक्नालॉजी के दरवाज़ों को मुसलमानों पर बन्द कर देना। क्यों बन्द कर देना? इसलिए बन्द कर देना कि अगर साइंस और टेक्नालॉजी मुसलमानों के पास आ गयी तो मुसलमानों में और कुछ पैदा हो या न हो लेकिन फ़िक्र की आज़ादी जरूर पैदा हो जायेगी।

अगर फ़िक्र की आज़ादी पैदा हो जायेगी तो इंसान मुल्ला की बात मानने पर तैयार नहीं होगा। अक़्ल की बात मानने पर तैयार होगा और आप जानते हैं कि मुल्ला का पेट जितना बड़ा होता है, अक़्ल उतनी ही छोटी होती है।

फ़ुज़ूल ख़र्ची और फ़िरक़ापरस्ती क़ौमों की दुश्मन

इस्लाम वो दीन है जो कहता है कि दीन तुम्हारे आगे है मगर अक्ल (Intellect) दीन के भी आगे है। मस्अला यह भी होता है कि इन्सान के पास मज़हब और मज़हबी रस्में (Rituals) हों और अक़्ल न हो तो वो अपने दौर के शैतान का आल–ए–कार बन जाता है। जब दीन होता है लेकिन अक़्ल नहीं होती तो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का खून बहाता है।

जैसे इन्सान बकरे को ज़िबह करता है, वैसे ही एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को ज़िबह करता है। अभी मैं जब यहाँ आ रहा था तो एक बच्चे ने मुझ से कहा कि आप कहा करते थे कि शादियों में इसराफ (फ़ुजूल खर्ची) न हो और शादी इबादत है, उसे सादे तरीक़े से होना चाहिए। लोगों ने आप की बात नहीं मानी लेकिन नवाज़ शरीफ ने आप

की बात मनवा दी।

इसलिए कि मैं ज़बान से कह सकता था, उनके पास हुकूमत की ताक़त थी। बड़ा अच्छा काम किया।! शादी हाल वीरान हो गये। शादियों में जो इसराफ और फज़ूल खर्ची होती थी कि एक तरफ तो वो लोग जो अपने घरों पर भी बेहतरीन खाने खा रहे हैं और शादियों में आ कर भी बेहतरीन खाने खा रहे हैं तो दूसरी तरफ लोग फाक़े (Starvation) कर रहे हैं। इस्लाम के खिलाफ़ है ये कि एक तरफ़ लोग शादियों में दौलत लुटा रहे हैं और दूसरी तरफ लोग गुरबत ग़रीबी की वजह से फ़ाक़े कर रहे हैं। मैं आज पहली मरतबा आप के सामने कह रहा हूँ कि मेरा सर कभी किसी के सामने नहीं झुका है।

आज तक न मेरा सर किसी सदर (President) के सामने झुका है और न ही किसी वज़ीरे आज़म (Prim Minister) के सामने झुका है। लेकिन मैं नवाज़ शरीफ के आगे सर झुकाने को तैयार हो जाऊंगा अगर वो रस्मे क़बीह (शादियों में फुज़ूल खर्ची) को मिटाने के साथ–साथ दो काम और कर दें।''एक यहां से मुल्लाइयत और फिरकापरस्ती का ख़ात्मा कर दें और दूसरे तालीम (Education) को आम कर दें''। जेहालत सारे मसायल (Problem) की जड़ है। जब तक जेहालत को नहीं मिटाइयेगा, कुछ भी नहीं मिटने वाला है।

हिन्दू धर्म गुरूओं की इल्म दोस्ती

आप अगर हिन्दुस्तान आयें और मैं आप को हिन्दू हज़रात के बड़े–बड़े मंदिरों में लेकर चलूँ। आप की उनके धार्मिक गुरूओं से मुलाकात करवाऊँ। अगर आप किसी छोटे मंदिर जायेंगे तो मालूम होगा कि इस मंदिर का पंडित दून स्कूल का पढ़ा हुआ है। उस मंदिर का पुरोहित पंचमढ़ी का पढ़ा हुआ है। ये दार्जिलिंग का पढ़ा हुआ है। अगर बड़े–बड़े मंदिरों में जायेंगे और वहां के महंतों (Priests) पंडितों से मिलेंगे तो पता चलेगा कि ये आक्सफोर्ड़ (Oxford) का पढ़ा हुआ है, ये कैम्ब्रिज (Cambridge) का पढ़ा है। दूसरी तरफ यहां के चन्द मदरसे हैं कि जहां बच्चों के पैरों में ज़न्ज़ीरे डाल दी जाती है।(1)

आपने भी अखबारों में पढ़ा होगा कि बच्चों के पैरों में ज़न्ज़ीरें डाल–डाल कर उन को पढ़ाया जाता हैं। वहाँ कोई CAMBRIDGE का पढ़ा हुआ है, कोई (Oxford) का पढ़ हुआ है तो इसका नतीजा क्या है? वहां का एक बहुत मश्हूर मंदिर है 'तिरूपति मंदिर'। वहां करोड़ो रूपयों की आमदनी हो रही है। बुतों (Idols) के पैरों पर चढ़ावे चढ़ रहे हैं, नज़राने आ रहे हैं करोड़ों रूपयों के मगर जो पंडित हैं वो आक्सफोर्ड Oxford का पढ़ा हुआ है। इसका नतीजा ये हुआ कि उस मंदिर की आमदनी से 'अस्सी' डिग्री कालेज चलाये जा रहे है। न जाने कितने स्कूलों और पालिटिक्निकस (Polytechnic) को चलाया जा रहा है। देखा आपने एक दूसरे मज़हब का सरबराह (Head) अगर अक्लमन्द हो तो उस मज़हब के नाम पर होने वाली आमदनी को कहां लगाये गा? सिर्फ और सिर्फ तालीम (Education) को बढ़ाने के लिए। स्कूल खोल रहे हैं, कालेज खोल रहे हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि आने वाली सदी एजूकेशन (Education) की सदी होगी, जिसके पास जितनी एजुकेशन होगी, जितनी इन्फ़ारमेशन होगी। उतना ही वह आगे होगा। जो तालीम से महरूम होगा उसका वही नतीजा होगा जो यहाँ हो रहा है कि मुल्ला लड़ाते रहेंगे और लोग आपस में लड़–लड़ कर ख़त्म होते रहेंगे।

(1) ब्लूचिस्तान के क़बाएली इलाक़ों के कुछ मदरसों का ज़िक्र कर रहे हैं।